आर. एन. आई - राजहिन/2003/9899 डाक पंजीयन संख्या - श्रीगंगानगर/105/2012-2014

मासिक पत्रिका

अजायब बानी

वर्ष : दसवां | अंक : नौवां | जनवरी-2013

e-mail : dhanajaibs@yahoo.co.in Website : www.ajaibbani.org

परमात्मा सदा हमारे साथ है (नये साल का संदेश) 5

हुक्म (गुरु नानकदेव जी की बानी) सतसंग - परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज (16 पी.एस.आश्रम राजस्थान) 7

गुरसिक्ख की महानता (गुफा दर्शनों से पहले) 19

सवाल-जवाब परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब 27

संपादक
प्रेम प्रकाश छाबड़ा
099 50 55 66 71
098 71 50 19 99

उप संपादक
माया रानी

विशेष सलाहकार
गुरमेल सिंह नौरिया
099 28 92 53 04

संपादकीय सहयोगी
रेनू सचदेवा,
सुमन आनन्द,
सुखवीर कौर नौरिया व
परमजीत सिंह

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक व सम्पादक : प्रेम प्रकाश छाबड़ा के आदेशानुसार प्रिन्ट टुडे श्री गंगानगर से छपवाकर, सन्त बानी आश्रम, 16 पी.एस. वाया- मुकलावा, तहसील - रायसिंहनगर - 335 039 जिला श्रीगंगानगर (राजस्थान) से प्रकाशित किया।

प्रकाशन दिनांक 1 जनवरी 2013 - 130 - मूल्य - पाँच रुपये

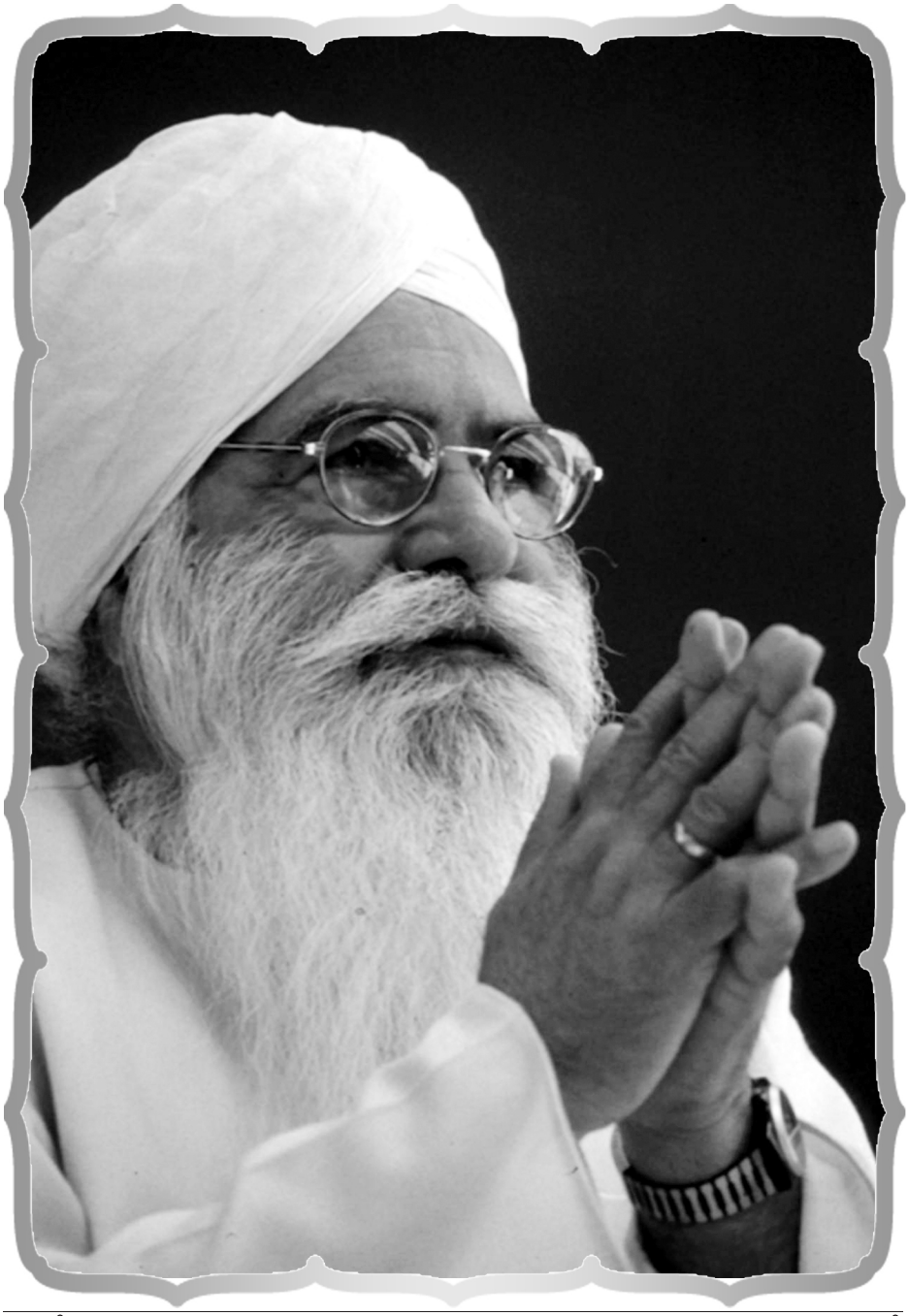

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा नये साल की शुभकामनाएं

परमात्मा सदा हमारे साथ है

प्यारे बच्चो! आज के इस मुश्किल के दौर में परमात्मा ने हमारे ऊपर दया की। वह परमात्मा इस तपती हुई दुनियां में हमारे लिए बीमारियों का चोला धारण करके आया। उसने हम पर दया की और अपना प्यार बरसाया।

महाराज कृपाल कहा करते थे, ''भूखे को रोटी प्यासे को पानी कुदरत का उसूल है जरूर देती है।'' उसी तरह परमात्मा सदा अपने भक्तों के लिए धरती पर आता है।

ईसा मसीह एक गरीब घर में पैदा हुए। आप कुलमालिक होकर मुश्किलों का सामना करते हुए अपने सेवकों को अपने घर सच्चखंड ले गए। उस समय के लोगों ने आपको काँटों का ताज पहनाया, सूली पर चढ़ा दिया फिर भी परमात्मा समय-समय पर अपने प्यारे सन्तों को इस संसार में भेजता रहता है।

परमात्मा कभी ईसा मसीह, कभी कबीर, कभी गुरु नानक, कभी सच्चे पातशाह सावन और कभी कुलमालिक दयालु कृपाल बनकर आया। हम खुशनसीब हैं कि हमें परमात्मा रूप कृपाल की झलक देखने का मौका मिला जिसका यश सारी दुनियां गाती है। दयालु कृपाल ने इस यतीम अजायब पर दया की और अपनी गोद में लिया। कोई उस ताकत की बराबरी नहीं कर सकता।

आप सब पर परमात्मा की दया और प्यार बना रहे, आप नए साल में ज्यादा से ज्यादा भजन-अभ्यास कर सकें।

मैं दयालु कृपाल के लिए यह शब्द गाता हूँः

आ कृपाल गुरु मैं शगन मनौंदी हां
के दर्शन दे जाओ मैं वास्ते पौंदी हां, (2)

1. आओ सतगुरु जी मैं अरजां करदी हां,
तेरी संगत दा मैं पानी भरदी हां, (2)
आ कृपाल गुरु .....

2. तेरी झलकी तों सूरज शरमौंदा ऐ,
तेरी महिमा दा कोई अंत ना पौंदा ऐ, (2)
आ कृपाल गुरु .....

3. तेरे बचनां ते मैं आण खड़ो गई हां,
रख लै पत्त साईयां मैं तेरी हो गई हां, (2)
आ कृपाल गुरु .....

4. भिच्छिया पांवीं तूं हैं पर उपकारी वे,
खाली मोड़ी नां दर आऐ भिखारी वे, (2)
आ कृपाल गुरु .....

5. तेरी संगत दा तूं आप सहारा हैं,
तेरे दर आया 'अजायब' विचारा है, (2)
आ कृपाल गुरु .....

आप सबको बहुत प्यार और नए साल की शुभकामनाएं,

आपका प्यारा
अजायब सिंह

सतसंग - परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

हुक्म

गुरु नानकदेव जी की बानी

16 पी.एस.आश्रम राजस्थान

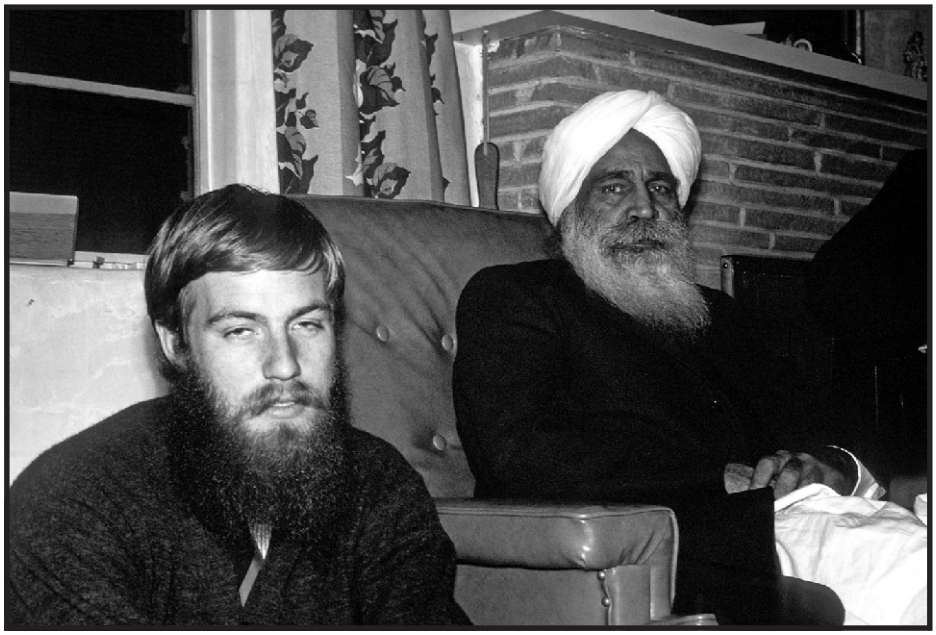

एक स्वान दोए स्वानी नाल भलके भौंकहे सदा ब्याल।

चाहे परमात्मा कृपाल शारीरिक रूप से इस संसार से चले गए लेकिन आप 'शब्द-रुप' में आज भी हमारे बीच में हैं। सब जानते हैं कि सन्तों के जाने के बाद लोभ के वश में होकर लोग पार्टियाँ बना लेते हैं, आपस में लड़ते हैं और कोर्टों में चले जाते हैं। ऐसा नहीं कि यह काम हमारे गुरुदेव के जाने के बाद हुआ। जब भी सन्त चोला छोड़ते हैं ऐसे लोग उनके आस-पास ही मौजूद होते हैं।

शुरु में जब मैं पप्पू के घर दिल्ली गया, वहाँ मुझे मिस्टर ऑबराय मिला। ऑबराय, महाराज कृपाल का सेकेट्री था। उसने

मुझसे सवाल किया अगर सन्त अपने जीवन काल में ही बता जाएं कि हमारे बाद कौन काम करेगा तो इसमें क्या हर्ज है? मैंने इसे काफी सन्त-महात्माओं के समय की बातें बताई। जो कुछ गुरु नानक जी के आखिरी समय में हुआ मैं आपको वह बता रहा हूँ।

आमतौर पर लोग नाम की कमाई नहीं करते उन्हें सन्तों से मिलने का मौका नहीं मिलता। हम सन्तों के नज़दीकी रिश्तेदारों से मिलकर सोचते हैं कि हमारे ऊँचे भाग्य हैं लेकिन यह सच्चाई नहीं क्योंकि हमारी आत्मा का सम्बंध शब्द-गुरु के साथ है।

हम अपने गुरु को भगवान मानते हैं। उसका कोई भाई-बंधु रिश्तेदार नहीं, उसकी कोई कौम-मजहब नहीं वह तो 'शब्द' देह धारण करके आता है। जिनके लिए **हुक्म** होता है उन्हें नाम दे जाता है; शब्द से जोड़ जाता है। वह देह में रहता हुआ भी अपने शब्द में समाया रहता है। वह देखने में देह जरूर नजर आता है लेकिन यह सच्चाई नहीं होती। एक बार तुलसी साहब ने मौज में आकर सतसंग में कहाः

रहूं री विदेह ते देह दरसाऊँ।

तुलसी साहब की एक सेविका ने कहा आपकी सब बातें ठीक हैं। आप चलते-फिरते हैं बोलते हैं खाना खाते हैं हम देखते हैं कि आप देह में हैं फिर आपकी यह बात कैसे मानी जाए? तुलसी साहब ने कहा, ''हाँ! तू पकड़।'' वह सेविका जफ्फा मारती लेकिन उसके हाथ में कुछ भी नहीं आता। आप सामने खड़े होकर बोल रहे थे, ''अरी पगली पकड़!'' ऐसा किसी ही सन्त के समय में होता है, आमतौर पर सन्त ऐसा नहीं करते।

भाई लैहणा करतारपुर में गुरु नानकदेव जी की शरण में गया। गुरु नानकदेव जी उसे जो कहते वह उसे इलाही **हुक्म**

समझकर करता था। एक बार बारिश हो रही थी। गुरु नानकदेव जी ने अपने बच्चों से कहा, ''पेड़ के ऊपर मिठाई लगी हुई है संगत भूखी है मिठाई उतारकर लाओ।'' बच्चों ने कहा, ''कभी पेड़ों पर भी मिठाई लगी है आप अनहोनी बातें करते हैं।'' गुरु नानकदेव जी ने भाई लैहणा को **हुक्म** दिया वह पेड़ पर चढ़ गया तो नीचे देखा मिठाई ही मिठाई पड़ी थी।

एक बार गुरु नानकदेव जी का कटोरा पानी में गिर गया आपने अपने बेटों श्रीचन्द और लखमीदास से कहा कि इसे निकालो। बेटे कहने लगे कि हम आपके बच्चे हैं क्या इसमें हाथ डालते हुए हम अच्छे लगेंगे? आपके इतने सेवक हैं आप किसी को भी कह दें। आपने भाई लैहणा को इशारा किया उसने फौरन निकाल दिया।

एक बार रात का समय था। गुरु नानकदेव जी ने अपने बच्चों श्रीचन्द और लखमीदास से कहा, ''दिन चढ़ा हुआ है चादरें धोकर ले आओ।'' बच्चों ने कहा, ''आधी रात का समय है बाहर बारिश हो रही है, इस समय चादरें कैसे धोई जा सकती हैं?'' जब आपने भाई लैहणा से कहा तो उसने कहा, ''हाँ जी! दिन उनके लिए ही चढ़ा हुआ है जिनके लिए आपने चढ़ाया है।'' जब हम नाम को प्रकट कर लेते हैं तो हमारे अंदर करोड़ों सूरजों की रोशनी हो जाती है। कमाई वालों के अंदर सूरज चढ़ जाता है, वे आधी रात को भी सूरज देखते हैं।

गुरु नानकदेव जी ने सोचा! मेरे जाने के बाद बच्चे झगड़ा न करें कि हमें गद्दी सौंपकर नहीं गए। यह गद्दी किसी की विरासत नहीं यह तो परमात्मा की विरासत है और इसका न्याय भी परमात्मा के घर में होता है कि किसे इस गद्दी पर बैठने का अधिकार है, किसने कमाई की है और कौन **हुक्म** का पालन करता है?

एक दिन गुरु नानकदेव जी बाहर चले जा रहे थे काफी संगत आपके साथ थी। आपने कुछ दूरी पर जाकर पैसों की बारिश की बहुत से लोग पैसे उठाने में लग गए और उनके साथ चलने वाले कम रह गए। आगे जाकर आपने रुपयों की बारिश की तो और लोग रुपये उठाने में लग गए आपके साथ चलने वाले और भी कम रह गए। थोड़ी दूर जाकर आपने मोहरों की बारिश की तो बाकी के लोग मोहरे उठाने लग गए आपके साथ चलने वाले केवल दो प्रेमी बाबा बूढ़ा और भाई लैहणा ही रह गए।

आगे चलकर गुरु नानकदेव जी ने कहा कि तुम मेरे पीछे क्यों आ रहे हो? बाबा बूढ़ा ने कहा, ''हम आपके सिक्ख है इसलिए हम आपके साथ चल रहे हैं।'' गुरु नानकदेव जी ने कहा, ''वही सिक्ख है जो **हुक्म** का पालन करे।'' बाबा बूढ़ा ने कहा, ''आप मुझे जो कहेंगे मैं वही करूँगा।'' गुरु नानकदेव जी ने कहा, ''यह मुर्दा पड़ा है तू इसे खा।'' अब मुर्दे को कौन खाए? मुर्दे को हाथ भी लग जाए तो हम नहाते हैं। गुरु नानकदेव जी के पास एक सलोत्र था। आपने बाबा बूढ़ा को सलोत्र मारा तो वह भागकर झाड़ियों के पीछे छिप गया।

आप आगे चल पड़े, भाई लैहणा आपके साथ चल रहा था। आपने उससे भी यही कहा, ''तू मेरे साथ क्यों आ रहा है?'' भाई लैहणा ने कहा, ''मैं आपका सिक्ख हूँ आप मेरे गुरु हैं आपके बिना मेरी कोई जगह नहीं।'' गुरु नानकदेव जी ने कहा, ''वही सिक्ख है जो **हुक्म** का पालन करे।'' भाई लैहणा ने कहा, ''आप जो कहेंगे मैं करूँगा।'' गुरु नानकदेव जी ने कहा, ''यह मुर्दा पड़ा है इसे खा।'' वह अंदर के राज़ से वाकिफ था उसने कहा, ''सतवचन।'' वह मुर्दे के आस-पास चक्कर काटने लगा कि किस

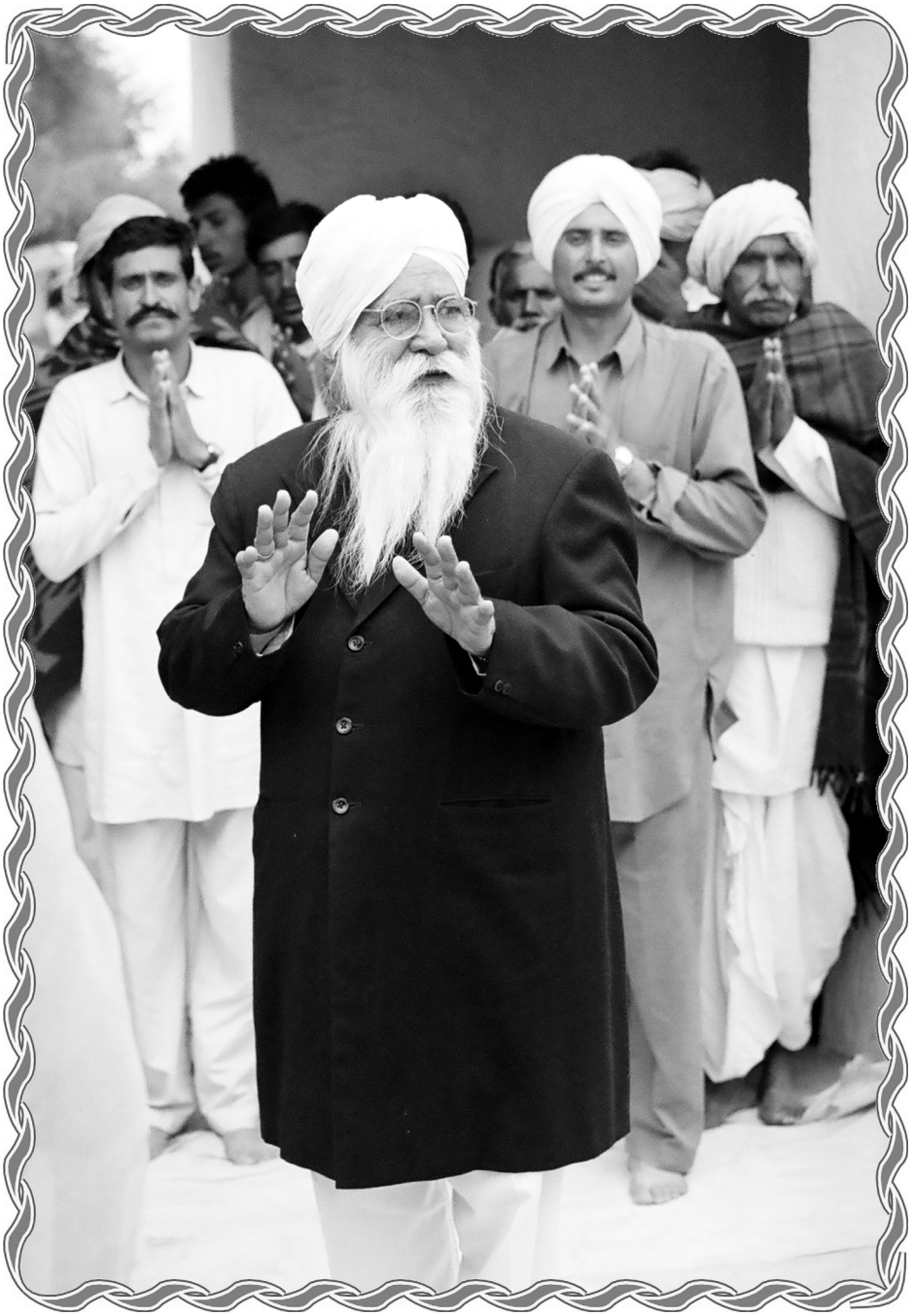

तरफ से खाऊँ, सिर की तरफ से या पैर की तरफ से। गुरु नानकदेव जी ने कहा कि सारा तूने ही खाना है, कहीं से भी खा।

सन्तों ने उसे मुर्दा क्या खिलाना था उसे केवल कसौटी पर परखना था। जब उसने चादर उतारी तो नीचे पकवान बना पड़ा था। गुरु नानकदेव जी ने उससे पूछा, ''तेरा क्या नाम है?'' उसने कहा, ''मेरा नाम लैहणा है।'' गुरु नानकदेव जी ने उसे गले से लगाकर कहा, ''तेरा नाम अंगद रख दिया है। हमारे बाद तूने ही यह कारोबार करना है तू जिसे नाम देगा मैं उसकी संभाल करूँगा।''

जब गुरु नानकदेव जी के बच्चों को यह पता लगा तो वे अंगद के साथ ईर्ष्या करने लगे कि एक नौकर हमारे घर का वारिस कैसे बन सकता है? गुरु नानकदेव जी ने अंगद से कहा, '' देख प्यारेया! हमारा आखिरी समय नज़दीक आ गया है, तूने हमारे क्रियाक्रम पर भी नहीं आना। तू अपने गाँव खंडूर साहब जाकर भजन-अभ्यास कर अगर कोई अभिलाषी आए तो उसे नामदान दे।'' यह क्रिया सब लोगों के सामने हुई फिर भी कोई मानने को तैयार नहीं था।

मुझे बाबा बिशनदास जी से 'दो-शब्द' का भेद मिला था। बाबा बिशनदास जी ने इस संसार में काफी लम्बी उम्र भोगी। बाबा बिशनदास को बाबा अमोलक दास से नाम था। बाबा अमोलकदास इस संसार में एक सौ चालीस साल रहकर गए। गुरु नानक देव जी के शहजादे श्री चन्द तकरीबन एक सौ पचास साल इस संसार में रहे। बाबा अमोलकदास ने बाबा बिशनदास को आँखों देखी कहानियाँ बताई थी कि श्री चन्द ने गुरु नानकदेव जी से नाम नहीं लिया था। श्री चन्द ने अविनाशी मुनि को गुरु धारण किया था। उसके पास 'दो-शब्द' का भेद था; लोग उसे शंकर का अवतार कहते थे।

गुरु नानकदेव का पाँच शब्द का रास्ता था। आप लोगों को भी पाँच शब्द का रास्ता मिला है। बाबा बूढ़ा की दस गुरुओं में बड़ी महानता है। उन्हें करतारपुर में गुरु नानकदेव जी से नामदान प्राप्त हुआ था। संगत ने बाबा बूढ़ा से विनती की कि गुरु नानकदेव जी के दर्शन नहीं हो रहे हमें बताएं कि इस समय वह कला कहाँ काम कर रही है? तब बाबा बूढ़ा संगत को लेकर गुरु अंगद के पास गए क्योंकि उन्होंने सारा कौतुक आँखों से देखा था।

गुरु अंगद अभ्यास में बैठे थे। उन्हें यह नहीं पता था कि गुरु नानकदेव जी संसार छोड़ गए है। जब उन्हें समाधि से उठाकर यह बताया गया कि हम सब आपके दर्शन करने के लिए आए हैं आपके अंदर गुरु नानकदेव जी काम कर रहे हैं आप हमें दर्शन दें क्योंकि गुरु नानकदेव जी ज्योति-जोत समा गए हैं। जब गुरु अंगददेव जी को यह पता चला तो आप बहुत तड़फे। गुरु का ऐसा समाचार बर्दाश्त करना बहुत मुश्किल होता है। उस समय गुरु अंगद के मुँह से स्वाभाविक ही यह निकलाः

जिस प्यारे से न्यों तिस अग्गे मर चलिए, धिग जीवन संसार ताके पाछे जीवणा।

अच्छा तो यह था कि मैं यह खबर न सुनता और यह खबर सुनने से पहले ही संसार छोड़ देता। अब मेरा जीवन धिग है, मेरे श्वास भी धिग हैं।

आखिरी समय में गुरु नानकदेव जी ने काफी कठिन परीक्षा की थी। आप नहीं चाहते थे कि बाद में लोग झगड़ा करें लेकिन माया के पुजारी सन्तों के जाने के बाद यही खेल खेलते हैं।

गुरु नानकदेव जी ने कहा, ''देखो प्यारेयो! भजन करना जरूरी है। ज्यादा खाना खाकर आप भजन नहीं कर सकते इसलिए दिन में

एक बार ही खाना खाओ।'' जिन्हें दिन में तीन बार खाना खाने की आदत है उनके लिए कितना मुश्किल है। कुछ दिनों के बाद आपने कहा कि एक दिन छोड़कर खाना खाएं। कई लोगों को बहुत मुश्किल हो गई कुछ तो पहले ही आश्रम से चले गए थे जो रह गए थे वे भी चले गए फिर आपने कहा कि तीसरे दिन खाना खाया करो यह सुनकर दो-चार ही प्रेमी आस-पास रह गए।

फिर आपने कहा कि बहादुर होकर खेती करो। पेट में भूख हो तो खेती करना कितना मुश्किल है। जो प्रेमी इस कौतुक को समझते थे वे खेती करने लगे, उन्हें पता था कि गुरु अंदर से ताकत भी देगा फिर आपने कहा कि दाने और तूड़ी अलग कर दो। जब ऐसा कर दिया तो आपने कहा कि तूड़ी और दानों को आग लगा दो। सबने कहा कि बूढ़ो में अक्ल नहीं रहती लेकिन लैहणा ने गुरु नानकदेव जी के **हुक्म** के मुताबिक सब कुछ किया।

भाई लैहणा ने कहा कि गुरु अक्ल वाला होता है। गुरु जो कहता है वह इलाही **हुक्म** होता है। हमें सब काम छोड़कर पहले गुरु का हुक्म मानना चाहिए।

गुरु नानकदेव जी कहते हैं कि हम जीव इसलिए पास नहीं होते और बार-बार दुनिया में आते हैं क्योंकि हमारे अंदर लोभ का कुत्ता है। यह कुत्ता सुबह-शाम भौंकता है और बिना मतलब ही आशा लगाकर कभी कुछ कभी कुछ माँगता है। इसके साथ आशा और तृष्णा दो कुत्तियाँ भी हैं। जिस तरह रात को पेड़ों के पत्ते खड़कते हैं या घर में कुत्ते-कुतियाँ भौंकते हैं इसी तरह यह भी सुबह उठकर अन्दर अपने-अपने मतलब की खातिर भौंक रहे हैं।

कूड़ छुरा मुट्ठा मुरदार धानक रूप रहा करतार।

आप कहते हैं, ''हर जीव को झूठ बोलने की आदत पड़ी हुई है। झूठ का छुरा हाथ में पकड़ा हुआ है और शिकारियों वाला रुप धारण किया हुआ है। अपने अन्दर वाले कुत्ते को खुश करने के लिए किसी का हक खाना या किसी के हक पर अपना हक जताना इस तरह है जैसे हम एक मुरदार खा रहे हैं।''

हुजूर ने इस गरीब का कुत्ता भौंकने से हटाया हुआ था। यह आपकी दया ही थी कि जिन जायदादों की खातिर लोग कोर्टों में चले जाते हैं, आपने अपनी दया करके पिछले गाँव में मेरी इतनी भारी जायदाद मुझसे छुड़वा दी।

बेशक परमात्मा कृपाल भगवान थे लेकिन आप जब शुरु में मुझे मिले तो इंसान की शक्ल में ही मिले। जिस आदमी को आप पहले से न जानते हो, जब उन्होंने दया करके यह कहा कि मेरे खड़े-खड़े ही इस जगह को छोड़ दे तो आप सोचकर देखें! उस समय मेरी क्या हालत हुई होगी? जीव दया से ही पास हो सकता है अगर लोभ का कुत्ता और आशा तृष्णा की कुत्तियाँ भौंकती होती तो यह गरीब आत्मा आपके **हुक्म** को कैसे मान सकती थी?

जिस तरह गुरु नानकदेव जी ने अंगददेव से कहा था कि अब तूने करतारपुर नहीं आना मैं ही तेरे पास आऊँगा। गुरु नानक साहब खुद अंगद के पास खंडूर साहब जाते रहे। इसी तरह मेरे गुरुदेव ने भी कहा था कि मैं जब जरूरत समझूंगा खुद ही तेरे पास आऊँगा। आप खुद ही आते रहे यह आपकी दया-मेहर थी।

मैं पत की वंदना करणी की कार, हौं बिगड़े रूप रहा बिकराल।।

मैं तेरे नाम के रास्ते पर नहीं चल रहा हूँ। मैं विकराल रूप बनाकर अपने आपको बड़ी समस्याओं में घेरकर बैठा हुआ हूँ।

तेरा एक नाम तारे संसार, मैं ऐहो आस ऐहो आधार।।

मुझे विश्वास है कि तेरा नाम सारे संसार को तार सकता है। मैं यही आशा लगाकर बैठा हूँ, मुझे इसी का आसरा है।

मुख निन्दा आखा दिन रात, परघर जो ही निज सनात।।

मुझे निन्दा करने की आदत है। मैं हर एक की निन्दा करता हूँ। सोते-जागते, चलते-फिरते मेरी निगाह पराए घर की औरतों और पराए धन-पदार्थ को अपना बनाने पर जाती है।

काम क्रोध तन बसे चंडाल धानक रूप रहा करतार।।

इस तन में पाँच डाकुओं काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार को जगह दी हुई है इसलिए हे करतार! मैं अपना रुप बिगाड़कर शिकारियों वाला रुप बनाकर बैठा हूँ।

फाही सुरत मलूकी वेश हौं ठगवारा ठग्गी देश।।

सुरत फाही लगाने वाली है। जिस भी देश में जाता हूँ वहाँ भी ठग्गी मारने की कोशिश करता हूँ और जिस देश में पैदा हुआ हूँ उसे तो माफ करना दूर की बात है।

खरा स्याना बहुता भार धानक रूप रहा करतार।।

यह जीव जितना ज्यादा स्याना है इसे उतना ही दूसरों की नुक्ताचीनी करने की आदत पड़ी हुई है। ईर्ष्या करके अपने सिर पर बोझ उठा लेता है, इसने अपना रुप ही बिगाड़ लिया है।

मैं कीता न जाता हरामखोर हौं क्या मुह देसा दुष्ट चोर।।

मैंने तेरे किए को नहीं समझा। मैं तेरे साथ ठग्गी मारने से भी नहीं टलता। तूने मेरे ऊपर परोपकार किया है दया की है। मैं यही

सोचता हूँ कि तू मुझे अंदर कहाँ देख रहा है? मैं भोग भोगता हूँ भजन नहीं करता। मैं तेरा चोर हूँ इसलिए तेरे दरबार में आते हुए डरता हूँ कि मैं क्या मुँह लेकर जाऊँ?

नानक नीच कहे बीचार धानक रूप रहा करतार।।

अब आप करतार के आगे विनती करते हैं कि मैंने नीच पुरुषों के लक्षण बताए हैं। मैं बहुत छोटा हूँ। सन्त कभी भी देह में बैठकर यह नहीं कहते कि हम दुनिया से ऊँचे हैं बल्कि अपने आपको गरीब, दास या नीचे कर्मों वाला कहकर ब्यान करते हैं।

गुरु नानकदेव जी महाराज ने इस छोटे से शब्द में बड़े प्यार से समझाया है कि परमात्मा किस तरह हमारे ऊपर दया करता है। परमात्मा शब्द-रुप देह धारकर शान्ति का देश छोड़कर यहाँ अशान्ति के देश में आता है। हमारी खातिर ऐसी देह धारण करता है जो रोगों का घर है। वह दुनिया के ताने-मेहणे भी सहता है और बहुत संघर्ष करके मन और इन्द्रियों पर जीत प्राप्त करता है।

जिस तरह समझदार पिता अपने बच्चों के लिए कमाता है ताकि उसकी कमाई बच्चों के काम आए इसी तरह सन्त-सतगुरु अपनी आत्माओं की खातिर रात-दिन जागकर मेहनत करते हैं, कमाई करते हैं क्योंकि यह आत्माएं भूखी हैं। इनकी रोज़ी-रोटी 'शब्द- नाम' की कमाई है अगर हम इनका थोड़ा सा भी परोपकार ध्यान में लाए तो हम हर ऐब को आसानी से छोड़ सकते हैं, नाम की कमाई की तरफ लग सकते हैं।

***

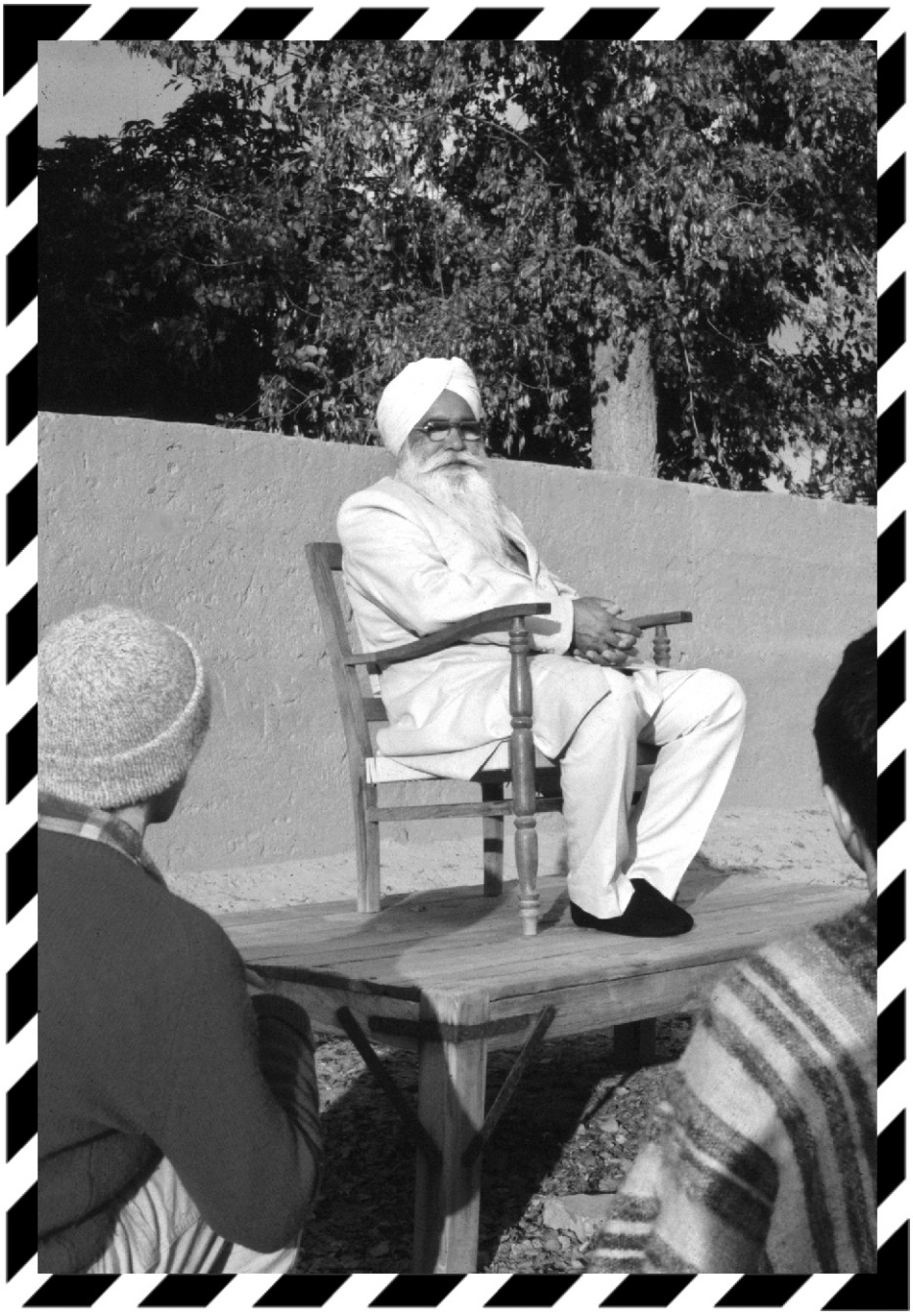

गुरसिक्ख की महानता

ओ सिक्खा, सिक्खी दा निभौंणा, औखा ऐ (2)

1. मैं मेरी हटौणी पैंदी ऐ, भेटा सिर दी चढ़ौणी पैंदी ऐ, (2)
सिक्ख नाम रखौणा, सौखा ऐ,
ओ सिक्खा .....

2. पहलां अंदरों मैल नूं, धोणा पवे,
फिर सोहणे दी याद विच, रोणा पवे, (2)
ठंडा भरना पैंदा, हौंका ऐ,
ओ सिक्खा .....

3. जो पीया नूं मिलणा चौहंदा ऐ, सच्चे दिल तों प्रेम, कमौंदा ऐ, (2)
सोहणा रब मिलने दा, मौका ऐ,
ओ सिक्खा .....

4. ज्यौंदे ही जग ते मरना पवे, सुख छड के सूली ते, चढ़ना पवे, (2)
बाहरों सेवक सदौंणा, सौखा ऐ,
ओ सिक्खा .....

5. जे विषयां तो सिक्ख आजाद होवे, अंदर गुरु कृपाल दा, राज होवे, (2)
'अजायब' दरगाह च जांणा फेर, सौखा ऐ,
ओ सिक्खा .....

आपने इस जगह के बारे में काफी सुना और पढ़ा है। अभी प्रेमी यह भजन बोल रहा था इसमें शिष्य की बड़ाई लिखी गई है। यह भजन बताता है कि शिष्य कौन होता है? अगर शिष्य वैरागी बन जाता है तो उसके लिए परमात्मा की दरगाह में प्रवेश करना बहुत आसान हो जाता है। जब शिष्य दुनियां के रसों को पहला

स्थान न देकर अपने गुरु परमात्मा को अधिक महत्त्व देता है तो उसके लिए अंदर जाना और परमात्मा के दरबार में जाना आसान हो जाता है।

अभी तक हमारे अंदर दुनियां की ख्वाहिशें और आनन्द समाया हुआ है इसलिए हमारे अंदर दुनियावी प्रकृति की लहरें और वेग उठते हैं अगर हम सांसारिक सुखों और ख्वाहिशों से उदासीन हो जाए तो हमारे अंदर गुरु का राज्य हो जाए फिर हमारे अंदर सारे विचार और वेग गुरु के ही पैदा होंगे।

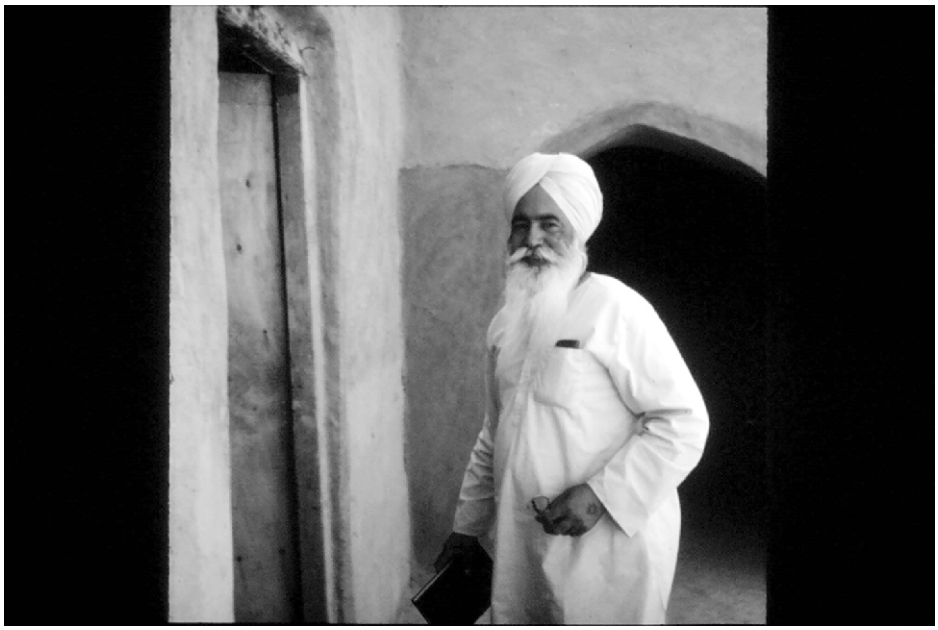

हम भाई गुरदास की बानी के एक छोटे से शब्द की कुछ लाइनें पढ़ेंगे। भाई गुरदास एक गुरसिक्ख थे। आप गुरु अमरदास जी के भतीजे थे। आप इस मार्ग पर प्रेक्टिकल होकर चले और सफल होकर सच्चखंड पहुँचे। आपने अपने जीवन में चार गुरु

गद्दिओं को बदलते हुए देखा। उस जमाने मे आवागमन के साधन नहीं थे फिर भी आपने बहुत मेहनत की और सात सौ लोगों को गुरु के चरणों में लाए।

आपने गुरुग्रंथ साहब को लिखने की सेवा की जबकि इसे गुरु अर्जुनदेव जी द्वारा संपादित किया जा रहा था। तब गुरु साहब ने कहा कि भाई गुरदास की लिखी वारें सन्तमत को मानने वालों के लिए कुंजी का कार्य करेंगी। यह वारें भजन-अभ्यास में, गुरु के विश्वास को बढ़ाने में और सच्चखंड पहुँचने में मदद करेंगी।

परम सन्त या पूर्ण गुरु बनने से पहले हर एक को सिक्ख बनना पड़ता है। गुरु और शिष्य का संबन्ध बड़ा गहरा होता है। गुरु और शिष्य एक-दूसरे में ऐसे समा जाते हैं जैसे बाहर से दो शरीर दिखाई देते हैं लेकिन अंदर से एक ही होते हैं। ऐसा नहीं कि सभी नामलेवा इस संसार में खो जाते हैं और तरक्की नहीं करते।

महाराज कृपाल सिंह जी कहा करते थे, ''सच्चाई का कभी नाश नहीं होता यह सदा मौजूद रहती है।'' आपमें से बहुत से प्रेमी अभ्यास करते हैं जिनके अंदर गुरु प्रकट हो जाता है वे गुरु को सामने देखते हैं, उससे बातें करते हैं। वे जो कुछ चाहते हैं गुरु से प्राप्त कर लेते हैं। इस ग्रुप में भी कुछ प्रेमी गुरु के प्रति समर्पित हैं।

जो शिष्य गुरु के जीवनकाल में सच्चखंड पहुँच जाते हैं वे गुरु की आज्ञा और इजाजत के बिना 'नामदान' देने की गलती नहीं करते। ऐसा शिष्य गुरु को पहचान लेता है उसमें गुरु के लिए सच्ची तड़फ, सच्ची भक्ति और सच्चा प्यार पैदा हो जाता है।

यह विश्वास दिलाना बड़ा मुश्किल होता है कि सतगुरु ने काम करने के लिए किसे नियुक्त किया है और किसे नामदान देने

की सेवा दी गई है। ऐसे शिष्यों की इस कार्य को करने में कोई रूचि नहीं होती और वे जानते हैं कि वे गुरु का स्थान नहीं ले सकते लेकिन वे गुरु के प्यार में बंधे होते हैं उन्हें गुरु की आज्ञा माननी पड़ती है। वे जानते हैं कि गुरु की आज्ञा न मानना एक बहुत बड़ा पाप होता है इसलिए वे गुरु के आगे शीश झुकाकर इसे स्वीकार कर लेते हैं।

ऐसे शिष्य गुरु के हुक्म से गुरु के स्थान पर कार्य करते हैं लेकिन वे आलोचना में नहीं पड़ते पार्टियाँ नहीं बनाते और संगत में फूट नहीं डालते। वे दीनता से भरे होते हैं और अपने गुरु से इतना प्यार करते हैं कि उनके शरीर के हर रोम से गुरु का प्यार निकलता रहता है। वे गुरु की आज्ञा का पालन करते हैं।

मुझे याद है कि जब महाराज कृपाल सिंह जी ने मुझे बताया कि किस तरह आपके प्यारे सतगुरु सावन सिंह जी ने आपको नामदान देने के लिए मजबूर किया था। आपने मुझे बताया कि बाबा सावन सिंह जी ने कहा, ''देखो कृपाल सिंह! मैं नहीं चाहता कि मेरी शिक्षा इस संसार से गुम हो जाए। बहुत लोग केवल किताबी ज्ञान ही देंगे लेकिन किताबी ज्ञान काफी नहीं है यह ऊपर नहीं ले जाता। नामदान देना किताबी ज्ञान देना नहीं होता, आत्माओं की जिम्मेवारी लेना होता है।'' यह कहकर बाबा सावन सिंह जी ने महाराज कृपाल को यह कार्य करने के लिए मजबूर किया।

आप कहा करते थे, ''अंधा आदमी आँख वाले आदमी की जगह नहीं ले सकता वह लोगों को मंजिल तक नहीं पहुँचा सकता क्योंकि वह देख नहीं सकता जबकि आँख वाला आदमी आसानी से लोगों को मंजिल तक ले जा सकता है।''

जब महाराज कृपाल मुझे यह सब बता रहे थे उस समय मैं काँप रहा था। मैंने ऐसा महसूस किया कि धरती मेरे पैरों के नीचे

से खिसकने वाली है। मुझे आश्चर्य था कि महाराज ने अचानक यह सारी बातें क्यों बतानी शुरू कर दी? मेरी हालत ठीक नहीं थी तब आपने कहा, ''तुझे लोगों को सच्चाई का संदेश देना पड़ेगा।''

मैं आपके सामने रोया। मैंने आपसे कहा, ''महाराज जी! मुझे संसार में कोई नहीं जानता। मुझे आप जितना दुनियावी ज्ञान नहीं। आप महान हैं, इतना ज्ञान रखते हैं फिर भी आपका विरोध हुआ, आपकी निन्दा हुई। लोग मेरी निन्दा करेंगे मुझे कोई दुनियावी ज्ञान भी नहीं है। मैं यह काम कैसे कर सकूँगा? मैं आपसे विनती करता हूँ कि आप सदा रहें और आप ही काम करें। हम केवल आपके पास बैठकर ही खुश रहेंगे।'' आपने कहा, ''तुम्हें चिन्ता करने की जरूरत नहीं है। जब बुरा आदमी बुराई नहीं छोड़ता तो भला आदमी भलाई क्यों छोड़े तुम्हें यह कार्य करना पड़ेगा।''

प्यारेयो! उन्होंने मेरे रोने और काँपने को नहीं देखा आपने मुझे गले लगाकर कहा, '' चिन्ता मत करो मैं सदा तुम्हारे साथ हूँ कुछ भी नहीं होगा। तुम्हारा काम सच्चाई का होका देना है।'' आप जानते हैं कि मैं अपनी मर्जी से कभी दुनियां में नहीं गया और न ही ऐसा कर सकता हूँ। मैंने सदा यही कहा कि आप जहाँ भेजते हैं चला जाता हूँ और आपका ही संदेश देता हूँ।

आप सोचकर देखें! जो इंसान संसार में किसी को न जानता हो, जिसने अपनी सारी जिंदगी जमीन के नीचे बैठकर बिताई हो अगर ऐसे आदमी को दुनियां में बाहर जाने के लिए कहा जाए तो वह कैसे विश्वास करेगा? ऐसे आदमी का बाहर दुनिया में जाना सरल नहीं है। यह कोई खाला जी का बाड़ा नहीं बहुत मुश्किल है।

आप जानते हैं कि जब शुरू में पश्चिम से प्रेमियों ने आना शुरू किया उस समय पप्पू अच्छी अंग्रेजी नहीं जानता था। शुरू में

बहुत से पढ़े-लिखे लोगों ने मुझसे कहा कि पप्पू एक छोटा बच्चा है यह अच्छी भाषा भी नहीं जानता इसलिए आपका बाहर दुनिया में जाना ठीक नहीं। मैंने उन प्रेमियों से कहा, ''यह मेरे हाथ में नहीं है। मैं न पप्पू और न ही उसके परिवार को जानता था लेकिन मेरा प्यारा सतगुरु मेरे साथ है। उसकी ताकत मेरे साथ है इसलिए मुझे कोई चिन्ता करने की जरूरत नहीं है।''

बलिहारी तिन्हाँ गुरसिखा जाइ जिना गुर दरसनु डिठा।

भाई गुरदास प्यार से फरमाते हैं, ''मैं उन गुरसिक्खों पर बलिहार जाता हूँ और अपने आपको चार टुकड़ों में कटवाने के लिए तैयार हूँ जो मेरे प्यारे सतगुरु के दर्शन करते हैं।''

प्यारेयो! जो गुरु के दर्शन करते हैं उनकी महानता ब्यान नहीं की जा सकती। यह कोई मामूली बात नहीं है गुरु के दर्शन करना कोई सरल काम नहीं है। जिन्होंने गुरु के दर्शन किए है, उनकी महानता सभी गुरुओं ने गाई है।

गुरु नानकदेव जी कहते हैं, ''जिन्होंने गुरु के दर्शन कर लिए वे फिर माता के गर्भ में नहीं जाते, उन्हें कोई तकलीफ नहीं होती। जिन्होंने गुरु के दर्शन किए हैं वे मुक्ति पा जाते हैं।''

बलिहारी तिन्हाँ गुरसिखां पैरी पै गुर सभा बहिठा।

आप कहते हैं, ''मैं उन गुरसिक्खों पर बलिहार जाता हूँ जो गुरु के आगे शीश झुकाते हैं और गुरु की संगत में बैठते हैं।'' आपने गुरु की संगत की महिमा गाई है। गुरु के चरणों में बैठना सबसे अच्छी संगत है। जो प्रेमी गुरु के नाम में गुरु की याद में इकट्ठे होकर बैठते हैं वे खुद को सहज और हल्का महसूस करते हैं। वहाँ 'शब्द-गुरु' मौजूद रहता है।

बलिहारी गुरसिखां गुरमति बोल बोलदे मिठा।

अब आप फरमाते हैं कि मैं उन गुरसिक्खों पर बलिहार जाता हूँ जो गुरुओं की शिक्षा को मानकर दूसरे समाज और दूसरे धर्मों के साथ प्यार का सम्बन्ध रखते हैं। लोग उनसे प्रेरणा ग्रहण करते हैं और उनका परिवार भी प्रेरित होता है। सतसंगी के जीवन को अच्छी प्रेरणा मिलती है क्योंकि जब लोग सुनते हैं कि यह सतसंगी बहुत मीठा बोलता है और इसका जीवन बहुत अच्छा है वे उसकी तरफ अच्छी नज़र से देखते हैं और प्रभावित होते हैं।

इस ग्रुप में बहुत से प्रेमी हैं जिनके माता-पिता मुझसे मिलने आते हैं; वे मुझे बताते हैं, ''हम आपके दर्शनो के लिए आए हैं क्योंकि आपने हमारे बच्चों के लिए बहुत त्याग किया है।''

बलिहारी तिन्हाँ गुरसिखां, पुत्र मित्र गुर भाई इठा।

अब आप कहते हैं, ''मैं उन गुरसिक्खों पर कुर्बान जाता हूँ जो अपनी उम्र के सतसंगियो को भाई-बहन, अपने से छोटो को बच्चों के समान और अपने से बड़ो को माता-पिता के समान समझते हैं।'' सतसंगियो ने इस जीवन के बाद भी मिलना होता है वास्तव में सतसंगी हमारे सच्चे सम्बन्धी हैं। महात्मा रविदास ने कहा है, ''जो इस शहर में रहता है वही मेरा साथी है।''

बलिहारी तिन्हाँ गुरसिखां गुर सेवा जाणनि अभिरिठा।

मैं उन गुरसिक्खों पर बलिहार जाता हूँ जिन्हें गुरु की सेवा प्यारी और मीठी लगती है वे बड़े ही प्रेम से सेवा करते हैं।

बलिहारी तिन्हाँ गुरसिखां आप तरे तारेनि सरिठा।

आप कहते हैं, ''मैं उन गुरसिक्खों पर बलिहार जाता हूँ जो खुद तर जाते हैं और सारी कायनात को तार देते हैं। गुरु सिक्ख की महानता बड़ी ही महत्त्वपूर्ण है।''

गुरसिख मिलिआ पाप पणिठा।

हम गुरु की महानता का वर्णन नहीं कर सकते और गुरसिक्ख के मिलने की महानता का भी वर्णन नहीं कर सकते क्योंकि पूर्ण गुरसिक्ख के मिलने से लाखों पाप समाप्त हो जाते हैं।

इस शब्द में आपने गुरसिक्ख की महानता का वर्णन किया है। हमें भी भाई गुरदास की तरह बनना चाहिए और उसी तरह से 'शब्द-नाम' का अभ्यास करना चाहिए। आप पूर्ण गुरसिक्ख बने और आपने संसार में दूसरे लोगों को भी प्रभावित किया। भाई गुरदास के प्रभाव के कारण ही बहुत से लोग गुरु अर्जुनदेव के पास नामदान लेने के लिए आए।

हमें भी भाई गुरदास की तरह भजन-अभ्यास करना चाहिए। अपने देश वापिस जाकर लोगों को इस यात्रा का फायदा बताना चाहिए और दूसरे लोगों को सन्तमत के बारे में बताना चाहिए कि गुरुओं के मार्ग पर चलना क्यों जरूरी है। सब लोग गुरु के प्रतिनिधि बनें और आदर्श जीवन जीएं। हमें दूसरे लोगों को प्रभावित करना चाहिए ताकि वे लोग भी इस मार्ग की ओर आकर्षित हों।

***

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब

सवाल-जवाब

एक प्रेमी: *प्यारे महाराज जी! मैं अक्सर अलग-अलग शहरों में जाता हूँ। जहाँ पर लोग अभ्यास कर रहे होते हैं। मैं वहाँ देखता हूँ कि अभ्यास के दौरान लोगों को अजीब-अजीब किस्म के तजुर्बे होते हैं। कुछ एक को ऐसा लगता है कि उन्हें दिल का दौरा पड़ने वाला है। कुछ एक को ऐसा लगता है कि उन्हें मतली आ रही है और वे अपने आपको बीमार महसूस करते हैं। कुछ एक को लगता है कि वे मरने वाले हैं लेकिन जब वे अपनी आँखे खोल लेते हैं तो उनका सारा तजुर्बा खत्म हो जाता है। जिन लोगों को ऐसे तजुर्बे होते हैं उन्हें क्या करना चाहिए?*

बाबाजी: हर सतसंगी को इस सवाल के बारे में सोचना चाहिए। महाराज कृपाल सदा यही कहा करते थे, ''जिस तरह कॉटेदार झाड़ी पर रेशम का कपड़ा पड़ा हो अगर हम जल्दी से उस कपड़े को निकालेंगे तो वह कपड़ा फट जाएगा अगर हम उसे धीरे-धीरे निकालेंगे तो हम उस कपड़े को सही सलामत बचा लेंगे।'' इसी तरह हमारी आत्मा परिवार, बाल-बच्चों और शरीर के रोम-रोम में फँसी हुई है।

आप अनुराग सागर पढ़कर देखें! शुरू में आत्माएं प्रभु के अंदर मिली हुई थी प्रभु में अभेद थी। प्रभु ने काल की सेवा वस होकर आत्माएं काल को सौंप दी। काल ने आत्माओं को नीचे के मण्डलों में उतार दिया। जब आत्माएं भँवरगुफा, पारब्रह्म में उतरी तो इनके ऊपर कारण पर्दा चढ़ गया। जब नीचे बह्म में आई तो सूक्ष्म पर्दा चढ़ गया। जब स्थूल शरीर में आई तो स्थूल पर्दा चढ़

गया फिर आत्मा ने बाहर की दुनिया को देखना शुरु किया तो अपनी रोशनी गुम कर ली और अपने घर की याद भूल गई।

काल ने बड़ी चालाकी से हमारी आत्मा पर काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार के पर्दे चढ़ा दिए। हमारी आत्मा को नीचे खींचने वाली पच्चीस प्रकृतियों की धारा भी साथ लगा दी। आत्मा के ऊपर सतोगुण, रजोगुण और तमोगुण के फंद भी लगा दिए।

सन्तों को जातिय तजुर्बा होता है। सन्त अपने प्यारे बच्चों को बताते हैं अगर हम आत्मा को जबरदस्ती इन पिंजरों में से निकालेंगे तो रेशमी कपड़े की तरह हमारे शरीर को भी तकलीफ होगी। हमारी आत्मा सिमरन के जरिए संसार में विचर रही है। हर आदमी अपने-अपने कारोबार का सिमरन कर रहा है; जैसे कर्ल्क अपने दफ्तर का सिमरन करता है कि कौन सा काम आज करना है और कौन सा काम कल करना है। लड़कियाँ चूल्हे-चौके का घर के कारोबार का सिमरन करती हैं कि कौन-सी चीज़ आज बनानी है, बच्चों को स्कूल भेजना है। जमींदार लोग अपने कारोबार का सिमरन करते हैं कि कौन-सी फसल बीजनी है, कौन-सी फसल काटनी है इसी तरह हर आदमी अपने सिमरन में लगा हुआ है।

सन्तों ने यही आसान तरीका निकाला है कि जैसे पानी की मारी खेती पानी से हरी होती है। सन्त हमें अपना कमाया हुआ सिमरन देते हैं उस सिमरन के पीछे उनका तप-त्याग काम करता है। सिमरन ही सिमरन को काटता है। हम जिसका सिमरन करते हैं उसका ध्यान अपने आप ही आ जाता है अगर हम दिन-रात सतगुरु का सिमरन अपनी जुबान पर लाएँगे तो सतगुरु का ध्यान अपने आप ही आना शुरु हो जाएगा।

नामदान के समय हमें बताया जाता है कि दोनों आँखों के बीच में ध्यान रखकर धीरे-धीरे सिमरन करें। हम आत्मा को जबरदस्ती शरीर में से नहीं निकाल सकते ऐसा करने से शरीर को तकलीफ होती है। जब हम धीरे-धीरे सिमरन करके अपना ध्यान ऊपर लाते हैं तो हमारा बहन-भाईयों के बीच फैला हुआ ध्यान शरीर में आना शुरु हो जाता है। जब ध्यान शरीर में इकट्ठा हो जाता है तो हमारे शरीर के रोम-रोम में से आत्मा अपने आप सिमटनी शुरु हो जाती है। पहले हमें चीटियाँ काटती है ऐसा महसूस होता है कि हम थोड़ा सा ही जागृत अवस्था में हैं लेकिन जब पूरा ध्यान आँखों के पीछे आ जाता है तो पास बैठे हुए को भी पता नहीं चलता कि कब आत्मा सिमट गई और उस प्रेमी को भी कोई तकलीफ नहीं होती।

जिन लोगों को अभ्यास में बैठे हुए बेहोशी सी होती है या उनका शरीर अकड़ जाता है ऐसा इसलिए होता है कि उन्होंने पहले कभी इतना भजन नहीं किया होता। वे भजन की तरफ से लापरवाह होते हैं, कई-कई घंटे या कई-कई दिन सिमरन को भूले रहते हैं। जब वे भूले-भटके सतसंग में आ जाते हैं तो उनके मन में उतावलापन पैदा होता है कि दूसरे लोग भजन करते हैं हम भी भजन-अभ्यास करें। जब हम अभ्यास को एकदम से बढ़ाते हैं तो तकलीफ होती है, हमें अभ्यास को धीरे-धीरे बढ़ाना चाहिए।

स्वामी जी महाराज ने कहा था कि सतसंगी को आलस और जल्दबाजी छोड़ देनी चाहिए। आलस हमें रोज़ाना अभ्यास नहीं करने देता। जब हम सतसंगियों में आकर बैठते हैं तो जल्दबाजी करते हैं कि हमारा पर्दा क्यों नहीं खुला? फिर हम ज्यादा से ज्यादा बैठने की कोशिश करते हैं। कई बार तो हम लोगों की नज़र में

वाह! वाह! कहलवाने के लिए भी ज्यादा बैठते हैं। जो आदमी रोज़ कम खाना खाता है अगर वह एक दिन दुगना खाना खा लेगा तो वह जरूर बीमार होगा।

काल के पास सतसंगियों को गिराने के बहुत तरीके हैं। वह कई बार हमें दिखावे का भक्त भी बना देता है कि लोग हमारी तारीफ करें और कहें कि यह इतने घंटे अभ्यास में बैठता है। कभी कहीं ज्यादा लोग इकट्ठे हों या किसी कमाई वाले प्रेमी सतसंगी ने बाहर से आना हो या सन्तों ने आना हो तो उस समय हम ज्यादा से ज्यादा समय अभ्यास में बैठ जाते हैं जबकि पहले कभी इतना समय भजन में नहीं दिया होता। ऐसा करने से हमारी टाँगें और धड़ सुन्न भी हो जाते हैं।

मानसिक रोगियों के साथ भी ऐसा हो जाता है लेकिन वे मानने के लिए तैयार नहीं होते कि हमें मानसिक रोग है अगर वे मान लें तो वे इन रोगों में फँसें ही क्यों? मानसिक रोगियों को अपनी सुरत का पता नहीं होता कि वह कहाँ गई है। उन्हें कई बार आठ-आठ पहर, चार-चार पहर सुरत नहीं आती कि हम कहाँ पड़े हैं? हम सोए हुए है या जाग रहे हैं?

जैसे हमें नामदान के समय समझाया जाता है अगर हम सन्तमत के उसूलों के मुताबिक सिमरन करें तो हमारी आत्मा धीरे-धीरे शरीर में से निकलकर आँखों के पीछे आ जाती है और हमें बाहर की दुनिया की याद भूल जाती है। हम अंदर जाग जाते हैं यह एक सपने जैसा प्रतीत होता है अगर कोई आवाज़ हो तो हम आँख खोल लेते हैं। हमें पिछली याद बिल्कुल भूली होती है हम आगे देखने लग जाते हैं फिर हम जब तक रस मानना चाहते हैं

वहाँ रहते हैं और अपनी मर्जी से आ जा सकते हैं। महात्मा इसी को जीते जी मरना कहते हैं। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

गुरु मुख आए जाए निसंग।

जब हमें अभ्यास में महारत हो जाती है तो आँखें बंद करते ही आसानी से ऊपर चले जाते हैं और आँखें खोलते हैं तो दुनिया में आ जाते हैं। ऐसे अभ्यासी लोग भीड़-भाड़ में चलते हुए भी अपना ख्याल मालिक से जोड़े रखते हैं। दुनिया से बातचीत करते हुए भी अपने ख्याल को प्रभु के साथ जोड़े रखते हैं।

मुख की बात सगल स्यों कर दा, जीव संग प्रभ अपने घर दा।

सन्तमत में अभ्यासी को खुशी होती है कभी कड़वा तजुर्बा नहीं होता। जिन्हें कड़वे तजुर्बे होते हैं वे अभ्यास नहीं करते सिर्फ देखा-देखी ही बैठते हैं।

मुझे महाराज सावन सिंह की संगत में ऐसा तजुर्बा देखने को मिला है कि ऐसी बहुत सी बीबीयाँ सतसंग में आगे बैठती थी जिन्हें कोई मानसिक रोग होता था। वे रोजाना तो सिमरन नहीं करती थी लेकिन उस दिन कोई चार घंटे तो कोई पाँच घंटे बैठती थी फिर वे पीछे की तरफ गिर जाती थी। दूसरी बीबीयाँ यह सोचती कि इसकी सुरत लग गई है और उसकी बल्ले-बल्ले करने लग जाती। हम भाई-बहन रोज उन्हें माथा टेकने लग जाते। ऐसी बीबीयाँ जब संगत में आती तो आम लोग उनको मान-बड़ाई देते। नए लोगों पर इस बात का बुरा असर पड़ता था कि ऐसा क्यों हो रहा है?

कभी-कभी जब महाराज सावन सिंह जी संगत के पास से गुजरते थे तो कई बीबीयाँ जो पीछे खड़ी होती थी वे आगे आकर उनके पैरों में गिर जाती थी और उल्टी होकर लेट जाती थी।

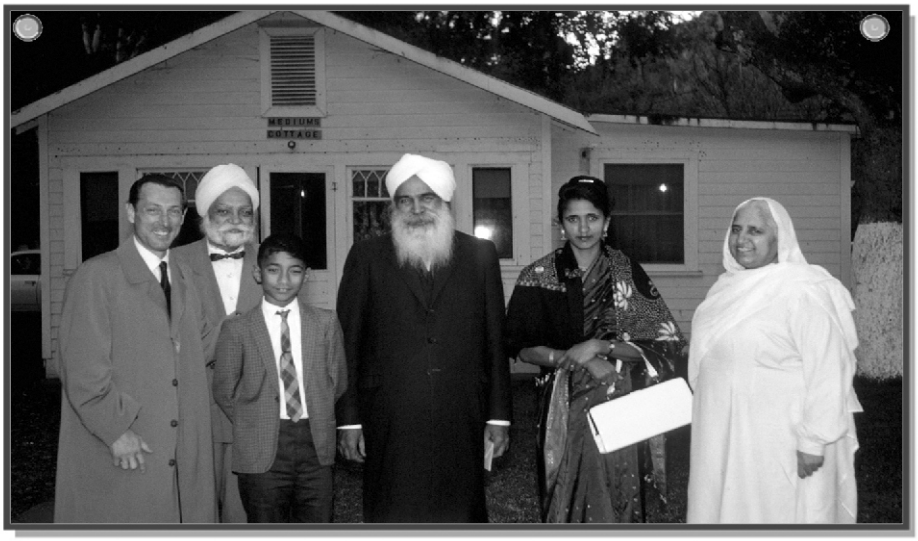

महाराज सावन इस बात का बुरा मानते थे। जो प्रेमी महाराज सावन सिंह जी के सतसंग का इन्तजाम करते थे उन्हें खास हिदायत दी जाती थी कि ऐसे लोगों को आगे न बैठने दिया जाए या इन्हें सतसंग में ही न बैठने दिया जाए ताकि ये दूसरे सतसंगियों को परेशान न करे।

मुझे ऐसा कुछ महाराज कृपाल के समय में भी देखने को मिला है। महाराज कृपाल जब राजस्थान आते तो आप भी ऐसे लोगों से खफ़ा होते थे।

मैं बताया करता हूँ जिन लोगों को कोई बीमारी होती है या कोई समस्या होती है ऐसी घटनाऐं उन लोगों के साथ ही होती है। ऐसा एक तजुर्बा बैंगलोर में भी हुआ। एक बुजुर्ग माता थी, उसके घर में कई समस्याएँ थी वह घर में तो कम अभ्यास करती थी। उसका सारा परिवार बहुत परेशान हुआ। उसके परिवार के लोग मुझे बुलाकर ले गए। मैंने उन लोगों से कहा कि तुम इसकी

मालिश करो शायद यह शरीर में आ जाए, डरने की कोई बात नहीं, वह माता काफी समय बाद होश में आई।

इस बार सन्तबानी आश्रम अमेरिका में भी एक ऐसा ही तजुर्बा हुआ। मैंने समय पर प्रेमियों को जानकारी दी उस प्रेमी को अस्पताल लेकर गए, डॉक्टरों ने बताया कि जिन लोगों को कोई मानसिक रोग होता है आमतौर पर उनकी ऐसी हालत हो जाती है। शरीर सुन्न होने से बढ़कर कुछ नहीं होता। हमें 'नामदान' के समय अभ्यास में बैठने की जो विधि बताई जाती है अगर हम उस तरह अभ्यास करें तो हमें कभी भी कड़वा तजुर्बा नहीं होगा।

महाराज कृपाल का यह वाक हमेशा याद रखें, ''सौ काम छोड़कर सतसंग में जाएं और हजार काम छोड़कर अभ्यास में बैठ जाए। जब तक आत्मा को भजन की खुराक नहीं दे लेते तब तक खाना न खांए।'' अगर हम महाराज कृपाल का यह पवित्र वाक अपने हृदय में बिठा लें तो किसी भी सतसंगी को न कभी कड़वा तजुर्बा हुआ है और न हो ही सकता है।

मैंने सन्तबानी मैगजीन के पहले संदेश में कहा था कि जिसने भी ग्रुप में आना है वह पूरी तैयारी करके आए। तैयारी का मतलब अभ्यास पर बैठने की पूरी प्रेक्टिस करके आएं ताकि यहाँ पर आकर फायदा उठा सकें। आमतौर पर जो प्रेमी तैयारी के साथ आते हैं वे मुझे अपनी तरक्की के बारे में बताकर जाते हैं कि वे पहले से ज्यादा आवाज या प्रकाश देख रहे हैं लेकिन जो तैयारी करके नहीं आते वे यहाँ आकर बीमार हो जाते हैं क्योंकि वे देखा-देखी ज्यादा समय अभ्यास में बैठते हैं जिससे उनका शरीर दुखने लग जाता है; वे बीमार पड़ जाते हैं और दूसरे प्रेमियों को भी परेशान करते हैं। ***

धन्य अजायब

16 पी.एस.आश्रम में अगले सतसंग के कार्यक्रम इस प्रकार हैं:

4	फरवरी	से	6	फरवरी	2013
27	फरवरी	से	3	मार्च	2013
31	मार्च	से	2	अप्रैल	2013

भजन-सिमरन और सतसंगो के कार्यक्रम की अधिक जानकारी के लिए www.ajaibbani.org पर अपना नाम रजिस्ट्र करें।

मासिक पत्रिका **अजायब बानी** से संबधित पत्र व्यवहार के लिए कृप्या सन्त बानी आश्रम, 16 पी.एस., रायसिंह नगर - 335 039 जिला श्रीगंगानगर (राजस्थान) पर संपर्क करें।